लेखक परिचय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च, 1911 को एक क व, शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ल लत-निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रूप में हुआ था। अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई क वता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले क व हैं। 1936-37 में सैनिक और वशाल भारत नामक पत्रिकाओं का उन्होंने संपादन भार संभाला। अज्ञेय जी 1943 से 1946 तक ब्रिटिश सेना को अपने कार्य से सेवा प्रदान कये। इसके पश्चात इलाहाबाद से प्रतीक नामक पत्रिका निकाली और ऑल इं डया रे डयो की नौकरी में भी कार्य कए। देश- वदेश की यात्राएं कीं। जिसमें उन्होंने कै लफोर्निया वश्व वद्यालय से लेकर जोधपुर वश्व वद्यालय तक में अध्यापन का काम कया। दिल्ली लौटने के बाद दिनमान साप्ताहिक, नवभारत टाइम्स, अंग्रेजी पत्र वाक् और एवरीमैंस जैसी प्र सद्ध पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कया। 1980 में उन्होंने वत्सलनि ध नामक एक न्यास की स्थापना की जिसका उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करना था। दिल्ली में ही 4 अप्रैल 1987 को उनकी मृत्यु हुई। 1964 में आँगन के पार द्वार पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाज़ा गया। 1978 में उन्हें कतनी नावों में कतनी बार पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुई।

प्रमुख कृतियाँ
क वता संग्रह:-भग्नदूत 1933, चन्ता 1942, इत्यलम्1946, हरी घास पर क्षण भर 1949, बावरा अहेरी 1954, इन्द्रधनुष रौंदे हुये ये 1957, अरी ओ करुणा प्रभामय 1959, आँगन के पार द्वार 1961, कतनी नावों में कतनी बार (1967), क्यों क मैं उसे जानता हूँ (1970), सागर मुद्रा (1970), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974), महावृक्ष के नीचे (1977), नदी की बाँक पर छाया (1981), प्रज़न डेज़ एण्ड अदर पोयम्स (अंग्रेजी में,1946)।[4]

कहानियाँ:- वपथगा 1937, परम्परा 1944, कोठरी की बात 1945, शरणार्थी 1948, जयदोल 1951
उपन्यास:-शेखर एक जीवनी- प्रथम भाग(उत्थान)1941, द् वतीय भाग(संघर्ष)1944, नदी के द्वीप 1951, अपने अपने अजनबी 1961 ।
यात्रा वृतान्त:- अरे यायावर रहेगा याद? 1943,एक बूँद सहसा उछली 1960।
निबंध संग्रह : सबरंग, त्रिशंकु, आत्मनेपद, आधुनिक साहित्य: एक आधुनिक परिदृश्य, आलवाल।
आलोचना:- त्रिशंकु 1945, आत्मनेपद 1960, भवन्ती 1971, अद्यतन 1971 ई.।

संस्मरण: स्मृति लेखा
डायरियां: भवंती, अंतरा और शाश्वती।
वचार गद्य: संवत्सर
नाटक: उत्तर प्रयदर्शी
जीवनी: रामकमल राय द्वारा ल खत शखर से सागर तक
संपादित ग्रंथ:- आधुनिक हिन्दी साहित्य (निबन्ध संग्रह)1942, तार सप्तक (क वता संग्रह) 1943, दूसरा सप्तक (क वता संग्रह)1951, तीसरा सप्तक (क वता संग्रह), सम्पूर्ण 1959, नये एकांकी 1952, रूपांबरा 1960।

सारांश

'बहता पानी निर्मला' अज्ञेय जी द्वारा र चत एक यात्रा वृतांत है। उन्होंने इस रचना के माध्यम से जीवन मर्म को समझाने की को शश कया है। उन्होंने समझाया है क मनुष्य को गतिशील रहना चाहिए , एक स्थान पर टिककर मनुष्य की अंतरात्मा जर्जर बन जाती है। ज्ञान की प्राप्ति हेतु मनुष्य को नए- नए स्थान पर अपना गति बनाए रखना चाहिए। चुनौतियों, मुश्किलों को झेलते हुए मनुष्य को आगे बढ़ते रहना चाहिए, उन चुनौतियों के डर से स्थान पर सदैव के लए स्थित हो जाना अनु चत है। मनुष्य को अपनी वास्त वकता को समझते हुए उन चुनौतियों को, मुश्किलों को, बाधाओं को तोड़ते हुए नए ज्ञान की उजास को प्राप्त करने के लए भ्रमण करते रहना चाहिए। इसी संदर्भ में उनका मंतव्य है "जीने की कला सबसे पहले एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की कला है।"
अज्ञेय जी घुमक्कड़ प्रवृ त्त के थे। उनके लए एक जगह पर टिकना असंभव कार्य था। वह हमेशा चेष्टा में रहते थे क वे नए- नए स्थानों की ओर उन्मुख हो, वहां की प्रवृ त्तयों को जाने- समझे, उनसे अपनी सामंजस्यता की पहचान दे। उन तालमेल से, नई ज्ञान से आलो कत हो यही उनका परम ध्येय था। एवं यही उनके जीवन की उत्कृष्ट कला थी। जीवन में चुनौतियों के भय से कई लोग एक ही जीवन दृष्टि को अपनाकर, एक ही संदर्भ में, एक ही संकु चत सद्धांत में जीवन को जीते हैं। परंतु अज्ञेय जी के अनुसार यह सद्धांत बिल्कुल गलत है, लोगों को अन्य

दृष्टिकोण से अपने जीवन का निर्वाह करना चाहिए। उन्हें अपनी आने वाली मुश्किलों को सहर्ष स्वीकार कर नए संदर्भ में उसे दूर कर नवीन समाधान रूपी ज्ञान को अपनाना चाहिए और इसी से वे जीवन के सही तरीके से रूबरू हो सकते है।

लेखक ने आधुनिक काल की परिस्थितियों को भी उजागर कया है क मानव जाति का एक बड़ा अंश प्रवासी एवं शरणार्थी का है, जिसमें लोग पेशे के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान या घर या तो फर कसी और कारणवश दूसरे स्थान में बसने के लए चुनाव करते हैं। लेखक ने आधुनिक काल के मानव जाति की इस ववशता में नवीन प्रकाश को ढूंढा है। प्रवासी के होने बावजूद लोग नए परिवेश से समग्रता से, समझ से सांझेदारी बैठा लेते हैं। अज्ञेय जी के अनुसार यही सत्य जीवन कला है।

इस यात्रा वृतांत में यात्रा के कई पहलुओं पर लेखक ने दृष्टिपात कया है। उनके अनुसार यात्रा के 3 तरीके हैं। जिसमें पहला व्यवस्थित है, इस तरीके में यात्रा की सारी योजनाएं सोच- वचार कर कया जाता है, जिसमें अज्ञेय जी को उत्साह नहीं होता। वह दूसरे तरीके के कायल हैं, जिसमें यात्रा की योजनानुसार लोगों को मुंबई जाने की खबर की घोषणा करते है मगर वास्तव में श्रीनगर जाते हैं। लेखक एक तीसरे तरीके के भी अख्तियार करते हैं, जिसमें सबसे मुंबई जाने की कर स्टेशन में नैनीताल जाने के लए तय करके हिमालय के भीतर प्रदेशों में से शलांग निकल जाते हैं। यह उनके लए सर्फ एक घूमने का जरिया नहीं बल्कि एक अनुभव है। अनजान चुनौतियों का सामना कर कस प्रकार उसका समाधान निकाला जा सकता है, यही अज्ञेय का इस यात्रा वृत्तांत में उपदेश है।

अज्ञेय जी इस पाठ में अंग्रेजी की एक कहावत "एक कील की वजह से राज्य खो जाता है" का उल्लेख कया है। जिस प्रकार एक छोटी सी कील के कारण घोड़े की गतिशीलता समाप्त हो जाती है और उस कारण घोड़े पर सवार उस राजा को हार माननी पड़ती है, उसी प्रकार एक छोटा सा कारण (ब्रुश और मोटर की ढिबरी) लेखक को बड़ी मुश्किलों में डाल देते हैं।

इसी मुश्किलों वाली घटना पर स्मृतियों को उद्वे लत करते हुए अज्ञेय जी कहते हैं क बरसात के एक दिन वह सोनारी गांव में सवेरे घूमने निकले थे। नदी बढ़कर सड़क के बराबर आ गई थी। बाढ़ के कारण कई गांव डूब चुके थे। दलदल में ट्रक धँस चुका था। वे भी मोटर में फंस गए थे, परंतु वे मोटर को बिना घुमाए उल्टे गयर में ढाई मेल तक लाए और बड़ी कठिनाइयों के पश्चात वे शवसागर पहुंचे। अतः अज्ञेय जी अपने इस मान सकता से चुनौतियों को अपनाने और उससे अनुभव प्राप्त करके जीवन में आगे बढ़ते रहने को दर्शाया है।

इस यात्रा वृतांत के अंत में वे 'रमत राम' की परिभाषा व्यक्त करते हैं। 'रमत राम' का अर्थ है जो रमता नहीं, वह राम नहीं, टिकना तो मौत है। इसका आशय यही है क मुश्किलों से हमें कभी भी डरकर, समटकर एक स्थान या सद्धांत में टिकना नहीं चाहिए। हमें मुश्किलों के सारे नए ज्ञान के प्रस्फुटन को खुले हाथ से अपनाना चाहिए। हमें बहते पानी की तरह स्वच्छ होना चाहिए ना क स्थिर पानी की तरह वचारों से प्रदू षत रहना चाहिए।

<u>शब्दार्थ</u>

१) निर्मल- साफ, स्वच्छ, प वत्र।
२) अनादिकालीन- इतना प्राचीन समय जिसके आरंभ का अनुमान नहीं लगाया जा सके।
३) सर्वेक्षण- परिदर्शन।
४) जबरदस्त- अत्य धक शक्तिशाली।
५) छप्पड़- बांस।
६) हठधर्मी- दुराग्रह।
७) तात्का लक- तुरंत का।

<u>प्रश्नोंत्तर</u>

१) 'रमता राम' का आशय क्या है?
उ: 'रमता राम' एक प्रकार का जीवन दर्शन है। जिसमें लोगों की गतिशीलता एवं स क्रयता की पहचान होती है। एक जगह से दूसरी जगह पर जाने से लोगों की अंतरात्मा में बसी बाधाएं संकोच दूर होकर ज्ञान की वृद् ध होती है। बहते हुए पानी की तरह बाधाओं को लेकर आगे बढ़ने से नवीन ज्ञान या अनुभव प्राप्त होगी, जो जीवन की सच्ची प्रकाश है।

२) यात्रा के कतने तरीके हैं? और क्या क्या?
उ: यात्रा के 3 तरीके हैं। जिसमें पहला व्यवस्थित है, इस तरीके में यात्रा की सारी योजनाएं सोच- वचार कर कया जाता है, जिसमें अज्ञेय जी को इस तरीके में मजा नहीं आता। वह दूसरे तरीके के कायल हैं, जिसमें यात्रा की योजनानुसार लोगों को मुंबई जाने की खबर की घोषणा करते है मगर वास्तव में श्रीनगर जाते हैं। लेखक एक तीसरे तरीके के भी अख्तियार करते हैं, जिसमें सबसे मुंबई जाने की कर स्टेशन में नैनीताल जाने के लए तय करके हिमालय के भीतर प्रदेशों में से शलांग निकल जाते हैं।

३) "एक कील की वजह से राज्य खो जाता है।" प्रस्तुत कहावत का आशय क्या है?
उ: "एक कील की वजह से राज्य हो जाता है" का अर्थ है एक छोटी सी ठुकी हुई कील की वजह से जिस प्रकार घोड़े की तेजस्विता समाप्त हो जाती है और उस कारण कोई राजा अपने युद्ध में पराजय को स्वीकारने में बाध्य हो जाता है, उसी प्रकार कील रूपी एक छोटी सी भूल (ब्रुश और मोटर की ढिबरी) बड़ी मुसीबतों (बाढ़) से साक्षात्कार करवा सकते हैं।

४) "वास्तव में जितनी यात्राएं स्थूल पैरों से करता हूंँ, उससे ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ।"
क) प्रस्तुत पंक्ति कस पाठ से उद्धृत है?
ख) स्थूल पैरों से और कल्पना के चरणों से यात्रा करने में क्या अंतर है?
उ: स्थूल पैरों से वचरण अर्थात शारीरिक ढंग से उपस्थित रहना जो क आधुनिक काल की व्यस्त जीवन के लए कठिन है। हृदय की चाह के कारण व्यस्तता से उभरकर नई जगहों में वचरण करना असंभव प्रतीत होता है। हृदय की मंशा को वास्त वकता देने के लए लेखक कल्पना के चरणों से यात्रा करते हैं, अपनी काल्पनिक शक्ति के द्वारा वह बिना संकोच के कही भी जा सकते हैं, जिससे साधन और समय की भी बचत होती है।

Teacher's Name- Riya Saha